# शायद यही ठीक था

Saiyam Jain

# शायद यही ठीक था

Saiyam Jain

# Table of Contents


1. खामोश लड़का
2. पहली झलक
3. नाम से पहचान तक
4. अनकही आदतें
5. दिल का डर
6. दोस्ती का भ्रम
7. उम्मीद की शुरुआत
8. वो किसी और की है
9. टूटना, बिना आवाज़ के
10. दूरी बनाना
11. खुद से सवाल
12. स्वीकार करना
13. आखिरी मुलाकात
14. मैं अब भी ठीक हूँ

# भूमिका

अक्सर हम उन कहानियों को सफल मानते हैं जिनमें दो लोग अंत में मिल जाते हैं। लेकिन उन कहानियों का क्या, जो अधूरी रहकर भी किसी की पूरी ज़िंदगी बदल देती हैं?

यह कहानी 'विवान' की है। एक ऐसा लड़का जो शब्दों के समंदर में रहता था, पर बोलने के लिए उसके पास एक कतरा भी नहीं था। उसकी चुप्पी कोई कमज़ोरी नहीं, बल्कि उसकी अपनी एक दुनिया थी—एक ऐसी दुनिया जहाँ वह लोगों को उनके शोर से नहीं, बल्कि उनकी आँखों की चमक और उनकी अनकही आदतों से पहचानता था।

ज़िंदगी के किसी मोड़ पर हम सबको कोई न कोई ऐसा मिलता है जो हमें हमारी अपनी खामोशियों से डरना नहीं, बल्कि उनसे प्यार करना सिखा देता है। विवान के लिए वह 'इनाया' थी। इनाया—जो धूप की तरह आई और विवान के अंधेरे कोनों को अपनी रोशनी से भर दिया।
पर यह कहानी सिर्फ एकतरफा प्यार की नहीं है। यह कहानी है उस दर्द की, जो हमें तोड़ता नहीं बल्कि गढ़ता है। यह कहानी है उस 'उम्मीद' की जो हारने के बाद 'शांति' में बदल जाती है।

अक्सर हम जिसे अपनी मंज़िल समझते हैं, वह महज़ एक रास्ता होता है—खुद तक पहुँचने का। विवान का सफर इनाया तक शुरू हुआ था, पर खत्म खुद पर हुआ।

यह किताब उन सबके नाम है जो भीड़ में चुप रहते हैं, जो बहुत कुछ महसूस करते हैं पर कह नहीं पाते। यह गूँज उन पन्नों की है जिन्हें कभी पढ़ा नहीं गया, और उस इश्क की है जिसे कभी लफ़्ज़ नहीं मिले।

**— संयम जैन**

# अध्याय 1: खामोश लड़का

कॉलेज की लाइब्रेरी की वह तीसरी मंज़िल विवान का पसंदीदा कोना थी। वहाँ खिड़की से बाहर पुराने बरगद का पेड़ दिखता था और किताबों की वह सोंधी महक थी जो उसे किसी भी कैफ़े की कॉफी से ज़्यादा सुकून देती थी। विवान, 22 साल का एक ऐसा नौजवान, जिसकी चुप्पी को अक्सर लोग उसकी झिझक समझ लेते थे। पर असल में, विवान को बातें करने से ज़्यादा बातें 'सुनना' और लोगों को 'पढ़ना' पसंद था। वह उन लोगों में से था जो कमरे में दाखिल होते ही शोर नहीं मचाते, बल्कि एक कोने में बैठकर यह देखते हैं कि कमरे की ऊर्जा कैसी है।

विवान के लिए दुनिया एक चलती-फिरती फिल्म की तरह थी। वह अक्सर लोगों के हाव-भाव और उनकी आँखों की चमक से उनके मन का हाल भांप लेता था। जहाँ कॉलेज के बाकी लड़के प्लेसमेंट, स्पोर्ट्स और डेटिंग की चर्चा में मशगूल रहते, विवान अपनी डायरी में कुछ स्केचेस बनाता या किसी पुराने शायर की नज़्म पढ़ता मिलता।
उसकी खामोशी उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसका चुनाव (choice) थी। वह जानता था कि वह भीड़ से अलग है, और उसे इससे कोई शिकायत नहीं थी।

"लोग शोर को ज़िंदादिली समझते हैं, पर कभी-कभी सबसे बड़ी बातें उन लम्हों में कही जाती हैं जब जुबान खामोश होती है।" — विवान की एक नोट।

लाइब्रेरी का दरवाज़ा खुला और कबीर अंदर आया। कबीर, जो विवान का बचपन का दोस्त था और उसके बिल्कुल विपरीत था—ज़िंदादिल, मज़ाकिया और हर बात को हल्के में लेने वाला।

"विवान! तू यहाँ फिर से अपनी इन पीली पड़ चुकी किताबों में दफ़न है? बाहर चल भाई, धूप खिली है और कॉलेज की कैंटीन में आज कुछ नया जोश है," कबीर ने फुसफुसाते हुए कहा (क्योंकि लाइब्रेरी में शोर मना था)।

विवान ने अपनी किताब बंद की और धीरे से मुस्कुराया। उसकी मुस्कुराहट में एक ठहराव था। "किताबें पीली ज़रूर हैं कबीर, पर इनमें लिखी बातें आज भी ताज़ा हैं। पर ठीक है, तेरी कैंटीन की 'ताज़ा' चाय पीते हैं।"

वे दोनों कॉरिडोर से होते हुए नीचे की ओर बढ़े। विवान चलते हुए हर छोटी चीज़ पर ध्यान दे रहा था—सीढ़ियों पर बैठ कर हँसते दोस्त, दीवार पर चिपके पुराने पोस्टर और खिड़की से आती धूप की लकीरें। वह अपनी दुनिया में सहज था। उसे इस बात की चिंता नहीं थी कि लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं, वह बस इस पल को जी रहा था।

कैंटीन में पैर रखते ही शोर का एक रेला उनसे टकराया। कबीर तो तुरंत अपनी मंडली में शामिल हो गया, लेकिन विवान ने अपनी जगह एक खंभे के पास वाली मेज़ पर बनाई।

वह वहाँ बैठा ही था कि तभी उसने महसूस किया कि आसपास की हवा जैसे थोड़ी चंचल हो गई है। लड़कों की ऊँची आवाज़ें थोड़ी धीमी हुईं और लड़कियों के ठहाके थोड़े और बढ़ गए। विवान ने अपना चश्मा ठीक किया और अपनी नज़रें मेज़ से ऊपर उठाईं।

सामने से इनाया आ रही थी।

इनाया का कॉलेज में होना ऐसा था जैसे किसी शांत झील में अचानक कोई पत्थर फेंक दे। वह अपनी दोस्तों के साथ हँसती हुई अंदर आई। विवान ने गौर किया कि इनाया के चलने में एक तरह की आज़ादी थी, जैसे वह ज़मीन पर नहीं, बल्कि हवा में चल रही हो। विवान ने उसे पहले भी कई बार देखा था, पर आज कुछ अलग था। आज उसकी खामोशी को जैसे एक चुनौती मिल गई थी।

उसे कोई बेचैनी नहीं हुई, न ही कोई डर लगा। बस एक गहरी जिज्ञासा ने उसके मन में दस्तक दी।

# अध्याय 2: पहली झलक

कैंटीन की मेज़ पर रखी चाय अब ठंडी हो चुकी थी, पर विवान का ध्यान उस कप पर नहीं था। उसकी नज़रें कैंटीन के उस प्रवेश द्वार पर टिकी थीं, जहाँ से अभी-अभी इनाया ने प्रवेश किया था।

इनाया का होना किसी ठंडी हवा के झोंके जैसा था जो बंद कमरे के पर्दों को हिला देता है। वह अपनी तीन सहेलियों के बीच घिरी हुई थी, पर फिर भी वह सबसे अलग चमक रही थी। उसने एक पीला कुर्ता पहना था और उसके बाल कंधों पर खुले थे, जो उसकी हर हरकत के साथ एक लय में हिल रहे थे।

विवान ने गौर किया कि इनाया की ऊर्जा कितनी संक्रामक थी। वह कैंटीन के उस बूढ़े कर्मचारी से भी उतनी ही गर्मजोशी से बात कर रही थी, जितनी अपने दोस्तों से। उसके बात करने के अंदाज़ में एक ऐसी सहजता थी जो विवान के लिए बिल्कुल पराई थी।

"कुछ लोग दुनिया में इसलिए आते हैं ताकि वे दूसरों को बता सकें कि ज़िंदगी को बिना किसी बोझ के भी जिया जा सकता है।" — विवान ने मन ही मन सोचा।

विवान को अक्सर लगता था कि लोग अपनी भावनाओं को छिपाने के लिए चेहरे पर कई नकाब पहनते हैं। पर इनाया? उसका चेहरा एक खुली किताब की तरह था। जब वह हँसती, तो उसकी आँखों के कोने थोड़े सिकुड़ जाते, और जब वह किसी की बात गौर से सुनती, तो उसकी भौहें हल्की सी ऊपर चढ़ जातीं।

तभी कुछ ऐसा हुआ जिसकी उम्मीद विवान को नहीं थी। इनाया अपनी सहेलियों के साथ अपनी मेज़ की ओर बढ़ रही थी, जो विवान की मेज़ से महज़ दो हाथ की दूरी पर थी।

चलते-चलते उसकी हँसी रुकी और उसने अपनी बिखरी हुई लट को कान के पीछे किया। उसी पल, उसकी नज़रें अनजाने में उस कोने में बैठे विवान से टकराईं।
विवान ने अपनी नज़रें नहीं चुराईं। वह कोई अपराधी नहीं था, वह बस एक दर्शक था। उन चंद सेकंड्स के लिए वक्त जैसे ठहर गया। इनाया की आँखों में एक पल की जिज्ञासा उभरी—शायद उसने सोचा हो कि यह लड़का उसे इतनी गहराई से क्यों देख रहा है? या शायद उसने पहली बार विवान की मौजूदगी को महसूस किया।

इनाया ने एक छोटी सी, लगभग न के बराबर मुस्कुराहट दी—वह औपचारिक मुस्कान जो हम अजनबियों को देते हैं—और आगे बढ़ गई।

"भाई, तू तो जम गया है! क्या देख रहा है?" कबीर ने विवान के सामने चुटकी बजाते हुए कहा।
विवान ने एक लंबी सांस ली और अपनी ठंडी चाय का घूंट भरा। "कुछ नहीं कबीर, बस देख रहा था कि कुछ लोग कितने 'Full of Life' होते हैं।"

कबीर हँसा। "इनाया की बात कर रहा है? हाँ यार, वह पूरे कॉलेज की 'धड़कन' है। लिटरेचर सोसाइटी की प्रेसिडेंट है, थिएटर करती है और सुना है पेंटिंग भी गज़ब की करती है। पर तू उसके बारे में क्यों सोच रहा है? वह तो बादलों में उड़ने वाली चिड़िया है और तू... तू तो ज़मीन के अंदर जड़ें जमा कर बैठने वाला बरगद है।"

विवान मुस्कुराया। कबीर की बात सच थी, पर अधूरी थी। "बरगद भी तो बादलों को ही निहारता है न, कबीर?"

उस शाम जब विवान अपने हॉस्टल के कमरे में लौटा, तो उसके पास सोचने के लिए कुछ नया था। वह इनाया के प्यार में नहीं गिरा था—वह इतनी जल्दी किसी के प्यार में पड़ने वाला इंसान नहीं था। वह तो बस उस 'रोशनी' से प्रभावित था जो इनाया अपने साथ लेकर चलती थी।

उसने अपनी डायरी खोली और पहली बार किसी का चेहरा बनाने की कोशिश की। उसने आँखें बनाईं, फिर उन आँखों की वह चमक जो उसने कैंटीन में देखी थी।

# अध्याय 3: नाम से पहचान तक

अगले कुछ दिन विवान के लिए एक अजीब सी कशमकश लेकर आए। वह अब भी वही शांत लड़का था, लेकिन अब उसके पास एक 'लक्ष्य' था—नहीं, इनाया से बात करना उसका लक्ष्य नहीं था, बल्कि उसे दूर से समझना उसकी एक नई आदत बन गई थी।

इनाया लिटरेचर सोसाइटी (Literature Society) की प्रेसिडेंट थी, और विवान को शब्दों से प्यार था। यह एक ऐसा साझा मैदान था जहाँ वे दोनों मिल सकते थे, लेकिन विवान अपनी 'खामोश' पहचान को इतनी जल्दी छोड़ने को तैयार नहीं था।

कॉलेज की लाइब्रेरी का वह हिस्सा जहाँ साहित्य (Literature) की पुरानी किताबें रखी थीं, वहाँ आमतौर पर सन्नाटा रहता था। विवान वहाँ मंटो की एक पुरानी किताब ढूँढ रहा था, जब उसने देखा कि गलियारे के दूसरी तरफ कोई सीढ़ी पर चढ़कर सबसे ऊपरी रैक को टटोल रहा है। वह इनाया थी।

उसने आज नीले रंग का दुपट्टा ले रखा था, जो किताबों की धूल भरी रैक के बीच किसी ताज़ा फूल जैसा लग रहा था। वह किसी भारी किताब को निकालने की कोशिश कर रही थी, और सीढ़ी थोड़ी डगमगा रही थी। विवान चाहता तो चुपचाप निकल सकता था, लेकिन उसका 'Observant' स्वभाव उसे रुकने पर मजबूर कर गया।

"वह बाईं तरफ वाली किताब फंसी हुई है, उसे पहले थोड़ा दाहिनी ओर खिसकाओ," विवान की आवाज़ लाइब्रेरी के सन्नाटे में गूँजी।

इनाया ठिठकी। उसने नीचे झुककर देखा। उसकी आँखों में वही जिज्ञासा थी जो कैंटीन में दिखी थी। उसने विवान के बताए अनुसार किया और किताब आसानी से बाहर आ गई। वह सीढ़ी से नीचे उतरी और एक लंबी सांस ली।

"थैंक्स! मुझे लगा था आज ये रैक मेरी जान लेकर ही मानेगी," इनाया ने हँसते हुए कहा। उसकी हँसी में कोई दिखावा नहीं था। "तुम... वही हो न, जो हमेशा कोने वाली मेज़ पर बैठते हो? कैंटीन में भी और यहाँ भी?"
विवान ने हल्का सा सिर हिलाया। "हाँ। और तुम वही हो, जो हर जगह शोर और रोशनी के साथ चलती हो।"
इनाया की आँखें चमक उठीं। उसे उम्मीद नहीं थी कि यह 'खामोश लड़का' इतना सीधा और गहरा जवाब देगा।

"रोशनी का तो पता नहीं, पर शोर की शिकायत प्रोफेसर अक्सर करते हैं। वैसे, मैं इनाया हूँ।"

"विवान," उसने बस इतना ही कहा। उसे लगा कि इतना नाम काफी है।

"विवान... नाम में गहराई है," उसने किताब को अपने सीने से चिपकाते हुए कहा। "वैसे विवान, तुम लिटरेचर सोसाइटी का हिस्सा क्यों नहीं बनते? कबीर बता रहा था कि तुम बहुत अच्छा लिखते हो।"

विवान को ताज्जुब हुआ कि कबीर ने उसके बारे में इनाया से बात की थी। उसने एक पल के लिए सोचा। "मैं लिखता हूँ... पर सुनाने के लिए नहीं। कुछ चीज़ें सिर्फ कागज़ और कलम के बीच ही अच्छी लगती हैं।"

इनाया ने उसे गौर से देखा, जैसे वह किसी पहेली को सुलझाने की कोशिश कर रही हो। "शायद तुम्हें लगता है कि दुनिया तुम्हें समझेगी नहीं। पर कभी-कभी, बोलना ज़रूरी होता है, ताकि लोग जान सकें कि उस खामोशी के पीछे क्या है। खैर, मदद के लिए शुक्रिया!"

वह हाथ हिलाते हुए चली गई। विवान वहीं खड़ा रहा। इनाया ने जाते-जाते उसके मन में एक विचार छोड़ दिया था। अब वह उसके लिए सिर्फ 'एक लड़की' नहीं थी, वह 'इनाया' थी—एक ऐसा नाम जिसके साथ अब एक छोटी सी स्मृति जुड़ गई थी।

विवान ने उस शाम अपनी डायरी में लिखा:
"नाम तो महज एक लेबल है, असली पहचान उस प्रभाव में होती है जो आप किसी पर छोड़ जाते हैं। उसने आज मेरा नाम लिया, और पहली बार मुझे अपना नाम सार्थक लगा।"

# अध्याय 4: अनकही आदतें

इनाया से हुई उस पहली बातचीत के बाद, विवान के लिए कॉलेज का भूगोल बदल गया था। अब उसे पता था कि इनाया किस समय लाइब्रेरी आती है, किस समय वह थिएटर की रिहर्सल के लिए ऑडिटोरियम की ओर जाती है, और वह कौन सा समय होता है जब वह अपनी सहेलियों से दूर अकेली बैठकर कुछ सोचती है।

यह 'पीछा करना' नहीं था; विवान के लिए यह किसी कविता के छंदों को समझने जैसा था। वह उसे देख रहा था ताकि वह उस 'आज़ादी' को समझ सके जो इनाया के व्यक्तित्व में थी।

एक शाम, जब कॉलेज लगभग खाली हो चुका था, विवान ने ऑडिटोरियम के पिछले दरवाज़े से अंदर झाँका। वहाँ स्टेज पर इनाया अकेली खड़ी थी। कोई संगीत नहीं था, कोई दर्शक नहीं थे। वह बस अपनी आँखें बंद करके कुछ पंक्तियाँ दोहरा रही थी।

विवान अंधेरे में आखिरी कतार की एक सीट पर चुपचाप बैठ गया।

इनाया के हाथ हवा में कुछ इस तरह लहरा रहे थे जैसे वह किसी अदृश्य कहानी को बुन रही हो। अचानक वह रुकी और ज़ोर से हँसी। "नहीं, इनाया! यह भाव बहुत कमज़ोर है। फिर से!" उसने खुद को डांटा।
विवान मंत्रमुग्ध था। उसने देखा कि जो लड़की बाहर इतनी 'Perfect' और खुशमिजाज दिखती थी, वह अकेले में खुद के साथ कितनी सख्त थी। वह अपनी कला को लेकर कितनी समर्पित थी।

विवान ने अपनी डायरी निकाली और उस धुंधली रोशनी में लिखना शुरू किया। उसने इनाया की उन छोटी आदतों को दर्ज किया जिन्हें शायद उसके सबसे करीबी दोस्त भी नहीं जानते थे:

- चाय और सोच: इनाया जब बहुत गहरी सोच में होती, तो वह अपनी चाय का कप पकड़े रहती लेकिन पीती नहीं थी। जब तक वह पहला घूँट लेती, चाय ठंडी हो चुकी होती।
- किताबों का स्पर्श: वह नई किताबों को पढ़ने से पहले उनकी खुशबू लेती थी—बिल्कुल वैसे ही जैसे विवान करता था।
- झुंझलाहट का संकेत: जब वह किसी बात से असहमत होती, तो वह अपनी दाहिनी आँख को हल्का सा सिकोड़ लेती।

विवान को महसूस हुआ कि वे दोनों बहुत अलग होकर भी एक जैसे थे। वह अपनी भावनाओं को शब्दों में छिपाता था, और वह अपनी भावनाओं को अभिनय (acting) के पीछे।

तभी इनाया की नज़र पीछे बैठी उस आकृति पर पड़ी। उसने अपनी आँखें मलीं। "विवान? तुम अभी तक यहाँ हो?"
विवान पकड़ा गया था, लेकिन वह घबराया नहीं। वह धीरे से उठकर स्टेज के करीब गया। "मैं बस देख रहा था कि एक 'परफॉरमेंस' के पीछे कितनी मेहनत होती है।"

इनाया स्टेज के किनारे पर बैठ गई, अपने पैर नीचे लटकाते हुए। "मेहनत नहीं विवान, यह खुद को खोजने की कोशिश है। कभी-कभी मुझे लगता है कि स्टेज पर मैं असल ज़िंदगी से ज़्यादा सच्ची होती हूँ।"

उसने विवान की ओर हाथ बढ़ाया। "दिखाओ, क्या लिख रहे थे?"

विवान ने पहली बार संकोच किया। "यह... यह बस कुछ नोट्स हैं। तुम्हारी 'अनकही आदतों' के बारे में।"

इनाया ने डायरी ली और कुछ पन्ने पलटे। उसकी मुस्कुराहट धीरे-धीरे गायब हो गई और उसकी जगह एक गहरी हैरानी ने ले ली। "तुमने यह सब नोटिस किया? कि मैं चाय ठंडी करके पीती हूँ? विवान... लोग मुझे देखते बहुत हैं, पर 'देखते' (observe) बहुत कम हैं।"

उस रात जब विवान हॉस्टल लौटा, तो उसे अहसास हुआ कि उसने इनाया के एक ऐसे हिस्से को छू लिया था जिसे उसने दुनिया से छिपा कर रखा था। यह दोस्ती से कुछ ज़्यादा था, लेकिन प्यार कहना अभी जल्दबाजी होती।

# अध्याय 5: दिल का डर

जैसे-जैसे विवान और इनाया की मुलाकातें बढ़ने लगीं, विवान के शांत मन में एक अजीब सा शोर घर करने लगा। वह शोर था— डर।

विवान के लिए यह सब नया था। उसने हमेशा अपनी दुनिया को एक कांच के बक्से में बंद करके रखा था जहाँ भावनाएं आती तो थीं, पर उसे चोट नहीं पहुँचाती थीं। लेकिन अब, इनाया उस बक्से में सेंध लगा चुकी थी। विवान को लगने लगा कि जितना वह इनाया के करीब जा रहा है, उतना ही वह खुद को खोने के जोखिम में डाल रहा है।
उस दोपहर कैंटीन में विवान हमेशा की तरह अपनी मेज़ पर बैठा था, लेकिन आज उसका ध्यान किताबों में नहीं था। इनाया बगल वाली मेज़ पर अपने दोस्तों के साथ हँस रही थी। उसने एक बार विवान की तरफ देख कर हाथ हिलाया, और विवान ने बस एक छोटा सा सिर हिला दिया।

यहीं से विवान के दिमाग की मशीन शुरू हो गई।

> "क्या मुझे उठकर उसके पास जाना चाहिए था? क्या मेरा सिर्फ सिर हिलाना उसे रूखा (rude) लगा होगा? क्या वह सोच रही होगी कि मैं कितना बोरिंग हूँ? शायद इनाया जैसी लड़की को मुझ जैसे शांत लड़के की संगत ज़्यादा देर तक पसंद नहीं आएगी।"*

> विवान का यह पक्ष उसकी सबसे बड़ी कमजोरी थी— Self-Doubt। उसे डर था कि जिस दिन इनाया को उसकी खामोशी के पीछे की 'साधारणता' का पता चलेगा, वह दूर चली जाएगी। वह अपनी खामोशी को अपनी ढाल मानता था, पर अब उसे लग रहा था कि यही खामोशी उसके और इनाया के बीच की सबसे बड़ी दीवार बन सकती है।

कबीर, जो विवान की आँखों को पढ़ना जानता था, उसके सामने आकर बैठ

गया। "विवान, तू यहाँ बैठा है और तेरा दिमाग किसी और ही दुनिया में चक्कर काट रहा है। क्या बात है?"

"कुछ नहीं कबीर, बस सोच रहा था कि कुछ चीज़ें दूर से ही अच्छी लगती हैं। पास जाओ तो उनका जादुई अहसास खत्म होने लगता है," विवान ने उलझी हुई आवाज़ में कहा।

कबीर ने उसकी बात काटते हुए कहा, "तू फिर से वही कर रहा है। तू किसी चीज़ के होने से पहले ही उसके खत्म होने का डर पाल लेता है। देख भाई, इनाया कोई पहेली नहीं है जिसे तुझे हल करना है। वह एक इंसान है। अगर वह तुझसे बात करती है, तो इसलिए क्योंकि उसे तू पसंद है। इसे इतना 'Complex' मत बना।"

विवान खामोश रहा। वह कबीर को कैसे समझाता कि उसके लिए 'पसंद किया जाना' एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी जैसा था?

शाम को इनाया ने लाइब्रेरी में विवान को रोका। "विवान, कल शाम लिटरेचर सोसाइटी की एक छोटी सी गेट-टुगेदर है। मेरी इच्छा है कि तुम आओ।"

विवान के अंदर के डर ने तुरंत जवाब तैयार किया। "इनाया, मैं... मैं ऐसी जगहों पर थोड़ा 'Out of place' महसूस करता हूँ। भीड़ और अनजान लोग... मुझे नहीं लगता मैं फिट हो पाऊँगा।"

इनाया की आँखों में एक पल के लिए निराशा की झलक दिखी, जिसे विवान ने तुरंत पकड़ लिया। "पर मैं तो अनजान नहीं हूँ न?" इनाया ने धीमी आवाज़ में पूछा।

विवान के पास कोई जवाब नहीं था। उसने इनाया को दुखी नहीं करना चाहता था, लेकिन उसका डर उसे पीछे खींच रहा था। "कोशिश करूँगा," उसने बस इतना ही कहा।

उस रात विवान ने अपनी डायरी में सिर्फ एक लाइन लिखी:

"डर यह नहीं है कि वह मुझे छोड़ देगी, डर यह है कि वह मुझे जान लेगी और फिर उसे पता चलेगा कि मैं वैसा नहीं हूँ जैसा उसने सोचा था।"*

# अध्याय 6: दोस्ती का भ्रम

विवान उस गेट-टुगेदर में गया। वह ऑडिटोरियम के एक अंधेरे कोने में खड़ा रहा, हाथ में कागज़ का कप लिए जिसमें अब कोल्ड ड्रिंक कम और पिघली हुई बर्फ ज़्यादा थी। इनाया केंद्र में थी—हँसती हुई, लोगों से घिरी हुई, और हर किसी को खास महसूस कराती हुई।

उसने दूर से विवान को देखा और भीड़ को चीरती हुई उसके पास आई। "तुम आए! मुझे लगा था तुम अपने 'किताबों के किले' से बाहर नहीं निकलोगे," उसने शरारत से कहा।

विवान मुस्कुराया। "किले की दीवारें थोड़ी कमजोर पड़ गई थीं।"

उस रात उन्होंने घंटों बात की। भीड़ के बीच रहते हुए भी वे दोनों एक अलग ही टापू पर थे। इनाया ने उसे अपने बचपन की कहानियाँ सुनाईं, और विवान ने उसे उन कविताओं के बारे में बताया जो उसने कभी किसी को नहीं सुनाई थीं। उस रात विवान को लगा कि शायद कबीर सही था—इसे 'Complex' बनाने की ज़रूरत नहीं है। यह दोस्ती है, और यह खूबसूरत है।

अगले कुछ हफ़्ते एक धुंध की तरह गुज़रे। विवान और इनाया अब अक्सर साथ दिखने लगे थे।

* वे लाइब्रेरी में साथ बैठते (भले ही इनाया पढ़ते-पढ़ते सो जाती और विवान उसे जागने तक देखता रहता)।
* वे कॉलेज के पीछे वाले पुराने गेट पर चाय पीते।
* वे बिना किसी मकसद के लंबे रास्तों पर चलते।

विवान ने अपने मन को समझा लिया था कि यह सिर्फ 'दोस्ती' है। "दोस्ती" शब्द एक सुरक्षा कवच की तरह था।

जब तक यह दोस्ती थी, तब तक खोने का डर कम था। जब तक यह दोस्ती थी, तब तक विवान को अपनी भावनाओं का हिसाब नहीं देना था।

पर क्या वाकई यह सिर्फ दोस्ती थी?

कॉलेज की छत पर सूर्यास्त का समय था। आसमान नारंगी और बैंगनी रंगों से भरा हुआ था। इनाया रेलिंग के सहारे खड़ी थी और विवान उससे एक कदम पीछे।

"विवान, तुम कभी-कभी इतने चुप क्यों हो जाते हो?" इनाया ने अचानक मुड़कर पूछा। उसकी आँखों में शाम की रोशनी चमक रही थी।

"मैं बस... सोच रहा था," विवान ने नज़रें चुराते हुए कहा।

"क्या?"

"यही कि... हम कितने अलग हैं। तुम एक खुली किताब जैसी हो, जिसे हर कोई पढ़ना चाहता है। और मैं उस किताब की तरह हूँ जिसे किसी ने लाइब्रेरी के सबसे पिछले रैक में रख दिया है।"
इनाया उसके करीब आई। इतनी करीब कि विवान उसकी सांसों की गर्माहट महसूस कर सकता था। "तुम्हें पता है विवान? जो किताबें सामने रखी होती हैं, उन्हें अक्सर लोग बस ऊपर-ऊपर से देख कर छोड़ देते हैं। पर जो किताबें छिपी होती हैं, उन्हें वही ढूँढता है जिसे वाकई पढ़ने का शौक हो।"

उसने विवान के हाथ पर अपना हाथ रखा। वह स्पर्श महज़ एक सेकंड का था, पर विवान के पूरे वजूद में एक बिजली सी दौड़ गई।

उस रात विवान सो नहीं सका। वह बार-बार अपने हाथ को देख रहा था जहाँ इनाया का स्पर्श हुआ था।

उसने खुद से झूठ बोला—"यह तो बस दोस्ती में होता है। दोस्त एक-दूसरे का हाथ पकड़ते हैं। दोस्त एक-दूसरे की तारीफ करते हैं।"

लेकिन उसका दिल जानता था कि 'दोस्ती' का यह लेबल छोटा पड़ने लगा है। वह एक ऐसे भ्रम में जी रहा था जहाँ उसे लग रहा था कि वह सुरक्षित है, जबकि असलियत यह थी कि वह एक ऐसी ढलान पर था जहाँ से वापस मुड़ना नामुमकिन था। उसने इनाया को अपने जीवन का हिस्सा नहीं, बल्कि अपना पूरा 'केंद्र' बना लिया था।

विवान की डायरी का उस रात का पन्ना:

"दोस्ती एक खूबसूरत पर्दा है, जिसके पीछे हम अक्सर उन भावनाओं को छिपा देते हैं जिन्हें स्वीकार करने की हिम्मत हममें नहीं होती। मैं इस पर्दे के पीछे खुश हूँ... क्योंकि पर्दा हटा, तो शायद रोशनी आँखों को चुभने लगेगी।"

# अध्याय 7: उम्मीद की शुरुआत

कॉलेज के सालाना उत्सव 'उड़ान' की तैयारियाँ ज़ोरों पर थीं। पूरे कैंपस में रंगीन रिबन, पोस्टर और रिहर्सल की आवाज़ें गूँज रही थीं। विवान, जो हमेशा ऐसे शोर से दूर रहता था, इस बार उसी शोर के केंद्र में खड़ा था। वजह साफ थी—इनाया।

इनाया ने ज़िद की थी कि लिटरेचर सोसाइटी के मुख्य नाटक का 'मोनोलॉग' (एकलाप) विवान ही लिखेगा। विवान ने पहले मना किया, पर इनाया की उन आँखों के सामने, जिनमें एक अजीब सा भरोसा था, वह हार गया।

देर शाम तक दोनों ऑडिटोरियम के पीछे वाले लॉन में बैठे स्क्रिप्ट पर चर्चा करते। विवान लिखता और इनाया उसे अपनी आवाज़ में पढ़ती।

"विवान, तुम्हारी लिखी बातों में ऐसा क्या है जो सीधा दिल को छू जाता है?" इनाया ने अपनी डायरी बंद करते हुए पूछा।

विवान ने उसे देखा। वह घास पर बैठी थी, उसके चेहरे पर चाँद की हल्की रोशनी पड़ रही थी। "शायद इसलिए क्योंकि मैं वही लिखता हूँ जो कह नहीं पाता। कागज़ पर झूठ बोलना मुश्किल होता है।"

इनाया ने मुस्कुराते हुए उसका कंधा छुआ। "मुझे खुशी है कि तुम अब धीरे-धीरे अपनी दीवारों से बाहर आ रहे हो। पता है, अब जब तुम नहीं होते, तो मुझे कुछ अधूरा सा लगता है।"

'अधूरा सा लगता है।'

इन चार शब्दों ने विवान के अंदर एक हलचल मचा दी। वह 'Overthinker' जो अब तक सिर्फ डरता था, अब एक अलग दिशा में सोचने लगा। क्या इनाया भी वही महसूस कर रही है? क्या उसकी खामोशी को इनाया ने सचमुच अपना लिया है?

उम्मीद एक बहुत ही खतरनाक चीज़ है। यह आपको उन सच्चाइयों से दूर ले जाती है जो बिल्कुल सामने खड़ी होती हैं। विवान को लगने लगा कि शायद वह पर्याप्त है। शायद उसे बदलने की ज़रूरत नहीं है, इनाया उसे वैसा ही पसंद करती है जैसा वह है।

उसने गौर करना शुरू किया:
 * इनाया अब सबके बीच से उठकर अक्सर उसके पास आकर बैठती।
 * वह अपनी छोटी-छोटी परेशानियाँ (जैसे उसकी माँ से हुई बहस या नाटक की चिंता) सिर्फ विवान से साझा   करती।
 * उसने विवान को एक छोटा सा हाथ से बना 'बुकमार्क' तोहफे में दिया था, जिस पर लिखा था—*"फॉर द बॉय हू लिसन्स टू द स्टार्स।"*

विवान ने उस रात अपनी डायरी में लिखा:

"पहली बार ऐसा लग रहा है कि शायद कहानी का अंत वैसा नहीं होगा जैसा मैं हमेशा डरता था। शायद अंधेरे और रोशनी का भी मिलन हो सकता है। क्या यह संभव है कि वह मुझे उस तरह देख रही है जैसे मैं उसे देखता हूँ?"

उसने अब इनाया के साथ भविष्य के सपने बुनना शुरू कर दिया था। वह उसे उन जगहों के बारे में बताने की योजना बना रहा था जहाँ वह उसे ले जाना चाहता था, उन किताबों के बारे में जो वे साथ पढ़ेंगे। उसका आत्मविश्वास बढ़ रहा था, पर यह आत्मविश्वास उस नींव पर टिका था जो इनाया ने नहीं, बल्कि विवान की 'उम्मीद' ने बनाई थी।

वह इस बात से बेखबर था कि इनाया के लिए यह 'गहरी दोस्ती' थी, और विवान के लिए यह 'इकलौती दुनिया'।

शाम की हवा अब ठंडी हो गई थी, पर विवान का दिल एक नई गर्माहट से भरा था। उसे लग रहा था कि वह अब और अकेला नहीं है। लेकिन कहानी के पन्ने पलटने वाले थे, और हकीकत अपनी पूरी ताकत के साथ खड़ी थी।

# अध्याय 8: वो किसी और की है

कॉलेज के सालाना उत्सव 'उड़ान' की शाम आ गई थी। पूरा ऑडिटोरियम लाइटों से जगमगा रहा था। विवान ने आज पहली बार अपने कपड़ों पर थोड़ा ज़्यादा ध्यान दिया था—उसने काली शर्ट पहनी थी, जिसे कबीर ने बड़ी मुश्किल से उसे पहनने के लिए मनाया था।

उसका लिखा हुआ नाटक शुरू होने वाला था। पर्दे के पीछे इनाया नर्वस थी। वह बार-बार अपनी स्क्रिप्ट देख रही थी। विवान उसके पास गया और धीरे से कहा, "तुम बहुत अच्छा करोगी। बस वैसे ही बोलना जैसे हम लॉन में बैठकर पढ़ रहे थे।"

इनाया ने विवान का हाथ कसकर पकड़ा। "तुम हो, तो मुझे डर नहीं लग रहा।"

नाटक सफल रहा। जैसे ही पर्दा गिरा, पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा। विवान गर्व से इनाया को देख रहा था, जो स्टेज पर झुककर सबका अभिवादन कर रही थी। विवान ने सोचा कि आज वह इनाया को अपने मन की बात कह देगा। वह इंतज़ार करने लगा कि कब इनाया स्टेज से नीचे आए।

लेकिन इनाया नीचे आते ही विवान की तरफ नहीं भागी। उसकी नज़रें किसी और को ढूँढ रही थीं।

भीड़ के बीच से एक लंबा, साफ-सुथरा और आत्मविश्वास से भरा लड़का बाहर निकला। उसका नाम “अंश” था। वह विवान जैसा 'गहरा' या 'शांत' नहीं था; वह 'स्पष्ट' था। जैसे ही वह इनाया के पास पहुँचा, इनाया के चेहरे पर वह चमक आई जो विवान ने पहले कभी नहीं देखी थी—एक ऐसी चमक जो सिर्फ 'खास' इंसान के लिए होती है।

विवान एक खंभे के पीछे खड़ा सब देख रहा था।

"अंश! तुम आ गए? मुझे लगा तुम मैच की वजह से नहीं आ पाओगे," इनाया ने लगभग चहकते हुए कहा।

"तुम्हारा नाटक कैसे मिस कर सकता था?" अंश ने मुस्कुराते हुए कहा और सहजता से इनाया के कंधे पर हाथ रख दिया। इनाया ने उसे हटाया नहीं, बल्कि और करीब आ गई।

विवान का दिल जैसे एक पल के लिए धड़कना भूल गया। उसे लगा जैसे किसी ने बर्फीला पानी उसके ऊपर डाल दिया हो। वह जिस स्पर्श को 'पवित्र' और 'खास' समझ रहा था, वह इनाया के लिए कितना सामान्य था।

तभी कबीर विवान के पास आया। उसने विवान की पथराई आँखों को देखा और समझ गया। "विवान... वह अंश है। इनाया उसे पिछले दो साल से पसंद करती है। कॉलेज आने से पहले से ही वे दोनों करीब हैं। आज अंश ने उसे प्रपोज़ करने का वादा किया था।"

विवान के कानों में कबीर की आवाज़ जैसे बहुत दूर से आ रही थी।

* 'पसंद करती है।'
* 'दो साल से।'
* 'करीब हैं।'

वह 'उम्मीद' जो पिछले एक हफ्ते से विवान के अंदर नाच रही थी, अब एक बोझ बन गई थी। उसे अपनी काली शर्ट, अपना लिखा हुआ नाटक और अपना खुद का वजूद भी भद्दा लगने लगा। उसे अहसास हुआ कि इनाया ने उसे कभी 'उस' नज़र से देखा ही नहीं था। वह तो बस एक 'अच्छा दोस्त' था—एक ऐसा दोस्त जो सुनता था, जो समझता था, पर जो 'वो' नहीं था।

अंश कोई विलेन नहीं था। वह एक अच्छा इंसान था, सरल और स्पष्ट। और शायद इनाया को वही सादगी चाहिए थी, विवान की जटिल खामोशी नहीं।

विवान ने अपना चश्मा उतारा और अपनी आँखें मलीं। वह बिना किसी को

बताए, बिना इनाया से मिले, ऑडिटोरियम के पिछले दरवाज़े से बाहर निकल आया। बाहर की ठंडी हवा भी उसके अंदर की जलन को कम नहीं कर पा रही थी।

उस रात विवान ने अपनी डायरी नहीं खोली। उसे डर था कि अगर उसने लिखा, तो कागज़ भी उसकी कड़वाहट से जल जाएगा।

सच्चाई यह नहीं थी कि इनाया ने उसे धोखा दिया। सच्चाई यह थी कि विवान ने खुद को धोखा दिया था।

# अध्याय 9: टूटना, बिना आवाज़ के

ऑडिटोरियम के पीछे वाला लॉन, जहाँ कुछ दिनों पहले विवान और इनाया ने चाँदनी रात में स्क्रिप्ट पढ़ी थी, अब बिल्कुल अंधेरे में डूबा था। विवान एक बेंच पर बैठा था। दूर से कॉलेज के फेस्ट का संगीत सुनाई दे रहा था, जो अब उसे किसी शोर की तरह चुभ रहा था।

कहते हैं कि सबसे गहरा दर्द वह होता है जिसे व्यक्त करने के लिए आपके पास कोई अधिकार न हो। विवान इनाया पर चिल्ला नहीं सकता था, वह उसे दोषी नहीं ठहरा सकता था। इनाया ने तो कभी उससे प्यार का वादा ही नहीं किया था। उसने तो सिर्फ दोस्ती का हाथ बढ़ाया था।

विवान ने अपनी जेब से वह 'बुकमार्क' निकाला जो इनाया ने उसे दिया था। "फॉर द बॉय हू लिसन्स टू द स्टार्स।" उसने उसे गौर से देखा। उसे अपनी सादगी और अपनी उम्मीदों पर हंसी आने लगी। वह लड़का जो सबको 'ऑब्जर्व' करने का दावा करता था, वह अपनी ही कहानी का सबसे बड़ा सच नहीं देख पाया।

उस रात वह हॉस्टल के कमरे में लौटा और अंधेरे में ही बैठ गया। कबीर कमरे में आया, उसने लाइट जलाई और विवान की हालत देख कर ठिठक गया। विवान की आँखों में आंसू नहीं थे, पर उसकी आँखों की वह चमक गायब हो चुकी थी जिसे कबीर ने पिछले कुछ हफ्तों में खिलते देखा था।

"विवान... देख भाई, जो हुआ उसमें तेरी कोई गलती नहीं है," कबीर ने पास बैठकर कहा।

विवान ने एक लंबी सांस ली। "गलती इनाया की भी नहीं है कबीर। गलती उस उम्मीद की है जो मैंने बिना किसी आधार के पाल ली थी। मुझे लगा था कि अगर कोई मुझे समझता है, तो वह मुझे प्यार भी करता होगा। पर समझ और प्यार... दो अलग रास्ते हैं।"

अगला पूरा हफ्ता विवान के लिए एक इम्तिहान की तरह था। वह कॉलेज तो गया, पर एक 'भूत' की तरह। वह उन्हीं रास्तों से गुज़रा, उन्हीं क्लास में बैठा, लेकिन उसका मन वहाँ नहीं था।

उसने इनाया को अनदेखा (avoid) करना शुरू कर दिया।
जब वह कैंटीन में दिखती, तो विवान लाइब्रेरी की तरफ निकल जाता।
जब उसका मैसेज आता—"कहाँ हो? आज चाय पर नहीं मिले?"—तो वह उसे घंटों बाद एक रूखा सा जवाब देता—"व्यस्त हूँ।"

इनाया उसके इस बदले हुए व्यवहार से अनजान और परेशान थी। उसे लगा कि शायद विवान अपनी किसी निजी समस्या से जूझ रहा है। वह एक दोपहर उसे लाइब्रेरी के पास मिल ही गई।

"विवान! क्या बात है? तुम भाग क्यों रहे हो? नाटक के बाद से तुमने ठीक से बात भी नहीं की। अंश से भी नहीं मिले, वह तुम्हारे बारे में पूछ रहा था," इनाया ने मासूमियत से कहा।

विवान के अंदर एक चीख उठी—* 'अंश के बारे में मुझसे मत पूछो!'* पर बाहर सिर्फ एक फीकी मुस्कान थी।
"कुछ नहीं इनाया, बस कुछ असाइनमेंट्स का बोझ है। और अंश... वह बहुत अच्छा लड़का है। तुम दोनों साथ में अच्छे लगते हो," विवान ने ये शब्द कहे, और उसे लगा जैसे उसने अपनी ही रूह पर नमक छिड़क लिया हो।

उस रात, हफ्तों बाद विवान ने अपनी डायरी खोली। उसका हाथ कांप रहा था। उसने पन्ने पर केवल चार लाइनें लिखीं:
"शीशे का टूटना शोर करता है, ताकि दुनिया को पता चल जाए कि कुछ खत्म हो गया है। पर दिल का टूटना उस बर्फ की तरह होता है जो रात के सन्नाटे में चुपचाप पिघल जाती है—बिना किसी को बताए, बिना कोई निशान छोड़े।"

उसने डायरी बंद कर दी। उसे अब लिखने में भी सुकून नहीं मिल रहा था। वह टूट चुका था, पर दुनिया के लिए वह अब भी वही 'खामोश लड़का' था।

# अध्याय 10: दूरी बनाना

किसी को भूलने की कोशिश करना, उसे याद रखने से कहीं ज़्यादा थका देने वाला काम है। विवान ने अब अपनी पूरी दिनचर्या बदल दी थी। वह कॉलेज उन रास्तों से जाता था जहाँ भीड़ कम हो। वह लाइब्रेरी के उस कोने में बैठने लगा था जहाँ से कैंटीन का रास्ता न दिखता हो।

विवान के लिए इनाया को अनदेखा करना दुनिया का सबसे कठिन काम था। जब भी वह इनाया की हँसी की आवाज़ सुनता, उसका दिल आज भी एक पल के लिए रुक जाता। पर अब, उस हँसी के साथ उसे अंश का चेहरा भी याद आता था। वह चेहरा, जो उसे उसकी हार की याद दिलाता था।

एक दिन, विवान कॉलेज के गार्डन के पीछे वाले पुराने बेंच पर बैठा था, जहाँ आमतौर पर कोई नहीं आता था। वह अपनी एक पुरानी किताब पढ़ रहा था—या शायद सिर्फ पन्ने पलट रहा था।

"यहाँ छिपे हो?" इनाया की आवाज़ ने उसे चौंका दिया।

विवान ने नज़रें नहीं उठाईं। "छिपा नहीं हूँ, बस शांति ढूँढ रहा था।"

इनाया उसके सामने आकर खड़ी हो गई। उसकी आँखों में इस बार नाराज़गी और चिंता दोनों थीं। "विवान, यह क्या हो रहा है? पिछले दो हफ़्तों से तुम न फोन उठा रहे हो, न ठीक से बात कर रहे हो। मैंने क्या किया है? क्या मुझसे कोई गलती हुई?"

विवान का मन हुआ कि वह चिल्लाकर कह दे— 'तुम्हारी गलती यह है कि तुम इतनी अच्छी क्यों हो? तुम्हारी गलती यह है कि तुमने मुझे वह उम्मीद क्यों दी जो मेरे लिए थी ही नहीं!' पर वह विवान था। उसने बस अपनी किताब बंद की और ठंडी आवाज़ में कहा, "इनाया, तुम हमेशा सब कुछ अपने बारे में ही क्यों सोचती हो? कॉलेज खत्म होने वाला है, मेरे करियर के प्रेशर हैं, घर की बातें हैं। हर चीज़ का ताल्लुक तुमसे हो, यह ज़रूरी नहीं।"

इनाया जैसे पत्थर की हो गई। उसने कभी नहीं सोचा था कि विवान उससे इस लहजे में बात करेगा। उसकी आँखों में पानी भर आया, पर उसने उसे गिरने नहीं दिया।

"सॉरी," इनाया ने धीरे से कहा। "मुझे लगा हम दोस्त थे। मुझे लगा कि मैं तुम्हें जानती हूँ। पर शायद कबीर सही था, तुम अपनी दुनिया में किसी को आने नहीं देते।"

वह मुड़ी और तेज़ी से वहाँ से चली गई। विवान वहीं बैठा रहा। उसे पता था कि उसने इनाया का दिल दुखाया है, और यह अहसास उसके अपने दिल के टूटने से कहीं ज़्यादा तकलीफदेह था। पर उसे लगा कि यही एक तरीका है—इनाया को खुद से दूर करने का और खुद को पूरी तरह टूटने से बचाने का।

उस शाम विवान ने महसूस किया कि इनाया को दूर करना आसान था, पर उसके साथ जुड़ी यादों को दूर करना नामुमकिन। उसने अपनी डायरी में इनाया का वह स्केच देखा जो उसने बनाया था। उसने अपना हाथ उसे फाड़ने के लिए बढ़ाया, पर रुक गया।

कबीर कमरे में आया और विवान की हालत देखकर समझ गया कि कुछ बुरा हुआ है। "विवान, दूरी बनाने से घाव नहीं भरते, सिर्फ उन पर धूल जम जाती है। तू उसे सच क्यों नहीं बता देता?"

"क्या बताऊं कबीर? कि मुझे उस लड़की से प्यार है जो किसी और के सपने देख रही है? सच बताकर मैं उसकी नज़रों में 'बेचारा' नहीं बनना चाहता। कम से कम नफरत में एक गरिमा तो है," विवान ने दीवार की तरफ मुड़ते हुए कहा।

विवान ने सफलतापूर्वक दूरी तो बना ली थी, पर इस दूरी ने उसे एक ऐसे अंधेरे कमरे में कैद कर दिया था जहाँ उसकी अपनी परछाईं भी उससे सवाल पूछ रही थी।

# अध्याय 11: खुद से सवाल

इनाया को उस दिन गार्डन में रुलाने के बाद, विवान के भीतर जैसे कुछ मर गया था। उसने सोचा था कि उसे दूर करके वह सुकून पाएगा, लेकिन उसे क्या पता था कि नफरत का नकाब पहनना, प्यार को छिपाने से कहीं ज्यादा भारी होता है।

हॉस्टल की छत पर आधी रात का सन्नाटा था। विवान अकेला बैठा था, ठंडी हवा उसके चेहरे से टकरा रही थी, पर उसे कुछ महसूस नहीं हो रहा था। उसके दिमाग में एक ही सवाल बार-बार गूँज रहा था—"क्या मैं वाकई यही चाहता था?"

अगले दिन जब उसने आईने में अपना चेहरा देखा, तो उसे अपनी आँखों में वह 'विवान' नहीं दिखा जो शांत और समझदार था। उसे एक ऐसा शख्स दिखा जो अपने ही घावों से डरकर दूसरों को चोट पहुँचा रहा था।

उसने खुद से कुछ कड़वे सवाल किए:

* "क्या मेरा प्यार इतना कमज़ोर था कि उसकी खुशी (अंश के साथ) देखकर मैं ज़हरीला हो गया?"
* "क्या मैं इनाया से प्यार करता हूँ, या मैं सिर्फ उसे 'पाने' की ज़िद में हूँ?"
* "अगर वह मेरे बिना खुश है, तो क्या एक दोस्त के नाते मेरा फर्ज उसे सहारा देना था या उसे बीच राह में छोड़ना?"

विवान को अहसास हुआ कि उसने इनाया को सिर्फ इसलिए दूर किया क्योंकि वह उसे 'देख' नहीं पा रहा था। वह उसे किसी और के साथ देखकर जल रहा था, और इस जलन को उसने 'आत्मसम्मान' का नाम दे दिया था।

कैंटीन के बाहर, विवान ने देखा कि इनाया अंश के साथ बैठी थी। अंश उसे हँसाने की कोशिश कर रहा था, पर इनाया की हँसी में वह पहले जैसी चमक नहीं थी। वह बार-बार अनमने ढंग से इधर-उधर देख रही थी।

विवान को समझ आया कि उसने न सिर्फ खुद को सजा दी है, बल्कि एक निर्दोष दोस्ती की हत्या भी की है। अंश ने उसका क्या बिगाड़ा था? अंश तो सिर्फ वह इंसान था जिसे इनाया ने चुना था। और इनाया? उसने तो बस विवान पर भरोसा किया था।

"सच्चा प्रेम वह नहीं जो साथ रहने का दावा करे, बल्कि वह है जो दूसरे की खुशी में अपनी तड़प को मुस्कुराकर पी जाए।" — विवान ने अपनी डायरी के एक कोने में लिखा।

विवान के अंदर का 'Overthinker' अब उसे एक नई दिशा में ले जा रहा था। उसे समझ आया कि इनाया को भूलना मुमकिन नहीं है, और उसे दूर रखना गलत है। उसे इनाया को 'छोड़ना' होगा—नफरत से नहीं, बल्कि प्यार से।
उसने कबीर से बात की। "कबीर, मैं गलत था। मैंने अपनी तकलीफ को इनाया की गलती मान लिया। मैं उसे वापस पाना नहीं चाहता, पर मैं उसकी यादों में एक 'कड़वा इंसान' बनकर नहीं रहना चाहता।"

कबीर ने उसके कंधे पर हाथ रखा। "देर आए दुरुस्त आए, भाई। खुद को माफ करना सीखो, तभी दुनिया को माफ कर पाओगे।"

उस रात विवान ने पहली बार चैन की नींद ली। उसने तय कर लिया था कि वह इनाया से माफी माँगेगा—इसलिए नहीं कि उसे वह वापस चाहिए, बल्कि इसलिए ताकि वह खुद को उस बोझ से आज़ाद कर सके जो उसे भीतर ही भीतर खा रहा था।

# अध्याय 12: स्वीकार करना

कॉलेज के आखिरी दिन करीब आ रहे थे। विवान ने महसूस किया कि स्वीकार करना हार मानने जैसा नहीं है, बल्कि यह एक तरह की जीत है—अपने स्वयं के डर और असुरक्षाओं पर जीत।

उसने इनाया को दूर से देखना बंद नहीं किया था, पर अब उसकी नज़रों में वह जलन नहीं थी। अब वह उसे वैसे ही देखता था जैसे कोई एक खूबसूरत सूर्यास्त को देखता है—यह जानते हुए कि वह उसे घर नहीं ले जा सकता, पर उसकी सुंदरता का आनंद तो ले ही सकता है।

विवान ने उस शाम अपनी डायरी निकाली। आज वह पन्नों को काला नहीं कर रहा था, बल्कि वह उन यादों को सहेज रहा था। उसने स्वीकार कर लिया था कि इनाया उसकी कहानी का एक हिस्सा थी, पूरी किताब नहीं।

उसने खुद से कहा:
"इनाया ने मुझे वह दिया जो मेरे पास कभी नहीं था—एक आवाज़। उसने मुझे सिखाया कि मैं भी 'महसूस' किए जाने के लायक हूँ। अगर उसका सफर किसी और के साथ पूरा होता है, तो इसमें मेरी हार नहीं, बल्कि उसकी नियति (Destiny) है।"

उसने इनाया से माफ़ी माँगने का फैसला किया, पर शब्दों से नहीं, बल्कि अपने आचरण से। उसे पता था कि वह अपनी उस कड़वाहट को मिटाना चाहता है जो उसने गार्डन वाली बातचीत में बोई थी।

विवान ने देखा कि इनाया अकेली बैठी थी। अंश वहाँ नहीं था। विवान ने एक गहरी सांस ली, अपने चश्मे को ठीक किया और उसके पास गया।

इनाया ने उसे देखा, पर इस बार उसकी आँखों में वह पहले वाली चमक नहीं थी, बस एक खालीपन था। वह उठने ही वाली थी कि विवान ने उसे रोक लिया।

"इनाया, बस दो मिनट।" उसकी आवाज़ में वही पुराना ठहराव था, कोई कड़वाहट नहीं।

इनाया रुकी, पर बोली कुछ नहीं।

"मैंने उस दिन जो कहा, वह मेरी तकलीफ बोल रही थी, 'मैं' नहीं। तुम हमेशा एक बेहतरीन दोस्त रही हो, और मैंने अपनी असुरक्षाओं की वजह से उस दोस्ती का अपमान किया। मुझे माफ़ कर सको तो करना, वरना कम से कम ये जान लो कि तुम्हारी दोस्ती मेरे लिए सबसे कीमती चीज़ थी।"

इनाया ने उसे गौर से देखा। उसे विवान के चेहरे पर वह पुरानी शांति लौटती हुई दिखी। उसकी आँखों में नमी तैर गई। "विवान, मैंने कभी तुमसे कुछ और नहीं माँगा था, सिर्फ़ तुम्हारी वो दोस्ती माँगी थी। तुमने मुझे अचानक पराया कर दिया..."

"मैं पराया नहीं कर रहा था इनाया, मैं बस खुद को ढूँढ रहा था। और अब मैंने खुद को पा लिया है," विवान ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

उस दिन के बाद विवान के कंधों से जैसे एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया। उसने अब इनाया और अंश को साथ देखकर भागना बंद कर दिया। उसने अंश से भी बात की और महसूस किया कि अंश वाकई एक सुलझा हुआ इंसान है।

विवान को समझ आया कि प्यार का मतलब 'अधिकार' नहीं, 'सम्मान' है। उसने इनाया की पसंद का सम्मान किया, और बदले में उसे वह 'सुकून' मिला जिसे वह कॉलेज के गलियारों में ढूँढ रहा था।

विवान की डायरी का उस रात का संदेश:
"स्वीकार करना कठिन है, पर यही वह चाबी है जो आपको आपके ही बनाए जेल से आज़ाद करती है। वह मेरी नहीं है, पर वह 'है'—यही काफी है।"

# अध्याय 13: आखिरी मुलाकात

फेयरवेल की शाम ऑडिटोरियम के बाहर उसी लॉन में रखी गई थी, जहाँ इस कहानी के कई उतार-चढ़ाव गूँजे थे। हर कोई सज-धज कर आया था। विवान ने वही सादी नीली शर्ट पहनी थी, जो अब उसके शांत व्यक्तित्व पर पहले से कहीं ज़्यादा फब रही थी।

विवान अब भीड़ में छिप नहीं रहा था। वह कबीर और अपने अन्य सहपाठियों के साथ खड़ा बातें कर रहा था। उसकी खामोशी अब भी थी, पर उसमें 'अकेलापन' नहीं, 'गहराई' थी।

इनाया लाल रंग की साड़ी में किसी पुरानी फिल्म की नायिका जैसी लग रही थी। वह अंश के साथ सबको फोटो के लिए बुला रही थी। विवान ने उसे दूर से देखा और मुस्कुरा दिया। उस मुस्कान में अब कोई कसक नहीं थी।

तभी इनाया की नज़र विवान पर पड़ी। उसने अंश को कुछ कहा और धीरे-धीरे चलकर विवान के पास आई।
"आज भी चुपचाप एक कोने में खड़े रहोगे, या अपनी यादों के बारे में कुछ कहोगे?" इनाया ने धीमी आवाज़ में पूछा।

विवान ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। "कहने के लिए अब शब्द कम पड़ गए हैं, इनाया। पर हाँ, आज मैं कोने में नहीं हूँ, मैं बस इस लम्हे को महसूस कर रहा हूँ।"

वे दोनों उस पुराने बेंच की तरफ टहलने लगे जहाँ उन्होंने पहली बार स्क्रिप्ट पर बात की थी। कुछ देर तक दोनों के बीच सन्नाटा रहा, पर यह वह कड़वा सन्नाटा नहीं था जिसने उन्हें पिछले दिनों अलग किया था। यह वह सन्नाटा था जो तब होता है जब दो लोग एक-दूसरे को पूरी तरह समझ लेते हैं।

"विवान, तुम अब क्या करोगे? कॉलेज के बाद?" इनाया ने पूछा।

“मैंने एक पब्लिशिंग हाउस में इंटर्नशिप शुरू की है। साथ ही अपनी कहानियों पर काम कर रहा हूँ। शायद अब मेरी खामोशी को पन्ने मिल जाएँ," विवान ने क्षितिज की ओर देखते हुए कहा।

इनाया रुकी और विवान के सामने खड़ी हो गई। "विवान, मैंने कभी तुमसे कहा नहीं, पर तुम्हारी उन 'अनकही आदतों' वाली बात ने मुझे अंदर से बदल दिया। तुमने मुझे वह आइना दिखाया जो शायद कोई और नहीं दिखा पाता। मैं... मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि तुम मेरी ज़िंदगी का हिस्सा रहे।"

विवान ने उसकी आँखों में देखा। वहाँ अब कोई भ्रम नहीं था। उसने धीरे से इनाया का हाथ पकड़ा—सिर्फ एक दोस्त की तरह, उसे विदा करने के लिए। "खुशकिस्मत मैं भी हूँ, इनाया। तुमने मुझे सिखाया कि एक तरफा प्यार भी इंसान को पूरा कर सकता है। धन्यवाद, मुझे खुद से मिलवाने के लिए।"

इनाया ने उसे गले लगाया। वह एक छोटा सा पल था, पर विवान के लिए वह उसकी पूरी तपस्या का फल था। उस गले लगने में कोई दावा नहीं था, कोई चाहत नहीं थी, बस एक 'शुक्रिया' था।

इनाया वापस अंश की तरफ मुड़ गई। विवान ने उसे जाते हुए देखा। इस बार उसने नज़रें नहीं हटाईं। वह तब तक देखता रहा जब तक वह भीड़ में ओझल नहीं हो गई।

रात को आसमान में आतिशबाजी हो रही थी। विवान ने अपनी जेब से वह पुराना बुकमार्क निकाला और उसे वहीं बेंच पर छोड़ दिया। वह अब उसकी निशानी नहीं थी, वह इनाया का हिस्सा था जो उसे वापस मिल चुका था। विवान अब खाली हाथ था, पर उसका मन भरा हुआ था।

# अध्याय 14: मैं अब भी ठीक हूँ

एक छोटे से कैफ़े की खिड़की के पास बैठकर विवान अपनी कॉफी का इंतज़ार कर रहा था। बाहर हल्की बारिश हो रही थी। मेज़ पर उसकी पहली किताब की एक प्रति (copy) रखी थी, जिसका शीर्षक था—"तुम तक, मगर बिना कहे"।
उसने आज अपनी किताब का पहला पन्ना पलटा और उन शब्दों को पढ़ा जो उसने अपनी रातों की नींद और खामोशियों से बुने थे।

विवान अब वह लड़का नहीं था जो भीड़ से डरकर कोनों में छिपता था। उसने अब भी कम बोलना पसंद किया, पर अब उसकी चुप्पी में 'झिझक' नहीं, बल्कि 'शांति' थी। उसने वह जवाब ढूँढ लिया था जो उसे कॉलेज के पहले दिन से परेशान कर रहा था: "क्या मैं कभी किसी के लिए 'Enough' हो पाऊँगा?"

उसे समझ आया कि सबसे पहले उसे खुद के लिए 'Enough' होना था। और वह था।

उसका फोन वाइब्रेट हुआ। एक सोशल मीडिया नोटिफिकेशन—इनाया ने उसकी किताब की फोटो पोस्ट की थी। फोटो के साथ कैप्शन था: *"उस इंसान के नाम, जिसने मेरी खामोशियों को मुझसे बेहतर समझा। गर्व है तुम पर, विवान।"*

विवान के चेहरे पर एक सहज मुस्कान आई। उसने न तो फोटो लाइक की, न ही कोई कमेंट किया। उसने बस फोन स्क्रीन बंद कर दी। उसे अब उस 'Validation' की ज़रूरत नहीं थी जिसके लिए वह कभी तड़पता था। उसे खुशी थी कि इनाया अपनी ज़िंदगी में खुश है, और वह अपनी दुनिया में।

कैफ़े में एक जोड़ा बगल वाली मेज़ पर बैठा था। लड़का कुछ बोलने की कोशिश कर रहा था और लड़की बस मुस्कुरा रही थी। उन्हें देखकर विवान को अपना अतीत याद आया, पर इस बार कोई दर्द नहीं हुआ।

विवान ने अपनी डायरी निकाली और आखिरी पन्ने पर लिखना शुरू किया: "अक्सर कहानियाँ शादी या बिछड़ने पर खत्म होती हैं। पर असल ज़िंदगी वहाँ से शुरू होती है जहाँ आप किसी को खोने के बाद खुद को पा लेते हैं। प्यार पाना किस्मत है, पर प्यार को समझकर उसे आज़ाद कर देना 'इबादत' है।"

विवान कैफ़े से बाहर निकला। बारिश थम चुकी थी और सड़कों पर गीली मिट्टी की सोंधी खुशबू थी। उसने एक गहरी सांस ली। उसे इनाया की याद अब भी आती थी, पर वह याद अब किसी घाव की तरह नहीं, बल्कि एक पुराने पसंदीदा गाने की तरह थी जो कभी-कभी मन में बज उठता था।

कबीर का फोन आया। "भाई! तेरी किताब अमेज़न पर बेस्टसेलर चल रही है। पार्टी कब दे रहा है?"

"जब तू कहे, कबीर," विवान ने हँसते हुए जवाब दिया। "पर आज नहीं, आज मैं बस इस शांति के साथ थोड़ा वक्त बिताना चाहता हूँ।"

विवान भीड़ भरी सड़क पर चलने लगा। अब वह उस भीड़ का हिस्सा था, पर फिर भी अपनी पहचान में सुरक्षित था।

उसने इनाया को नहीं पाया, उसने वह प्यार नहीं पाया जिसकी उसने उम्मीद की थी। लेकिन उसने उससे भी बड़ी एक चीज़ पा ली थी— खुद का साथ।

वह मुड़ा और चलते हुए बुदबुदाया, "मैं अब भी ठीक हूँ। बल्कि, मैं अब पहले से कहीं बेहतर हूँ।"

कुछ कहानियाँ अधूरी नहीं होतीं,
बस उनका पूरा होना
हमारे साथ नहीं होता।

जो चला गया,
वो शायद उसकी मंज़िल के लिए सही था,
और जो रुक गया,
वो अपने लिए सही था।

शायद यही ठीक था...

Price ₹299
9789357896523